201

असीम आँसू

अश्कों को हमेशा गिरने का ही आदत है। उसकी इनायत से ढ़ेर सारी उम्मीदों की अँकुर खिल चुका है। जिसने कोसकर गिरा था उस मिट्टी में, जहाँ, सदा केलिए बंजर बन चुका था। जिस बूँदों ने गवाह बन गयी उस रोमांचक लम्हे का। लेकिन उसको गिरने का मतलब जाननेवाले लोग उँगलियों से गिनने की लायक नहीं थी। दर्द के बिना आँसू भी केवल ओस कण बन जाती है। बाकी लोगों केलिए वह फर्माईशों, इच्छाओं और बेकार की पानी बन जाती है।

उस नयनों ने आज पहला आँसू नहीं बहा गया है। कई महीनों से उसकी लोचन भी सूख बन पड़ी थी। अश्कों की झरने को भी कुछ सीमा होती है न? दिल की गहराई पर अपनी दर्द को कई बार दफ़न करने की कोशिश किया, कलाई से गिरती गयी उस लाल बूँदें अनजान किनारे ढूँढ़का बह रही थी। उस लहरों ने साक्षी बन गयी थी, उसकी आँसुओं की, लेकिन झमझमाती हुई बारिश की बूँदों ने उस आँसुओं को छिपा दिया। काग़ज़ की कश्तियों उस ठंडी मल्लयानिल के साथ, साथ बह रही थी, उसकी मल्लाह की इंतज़ार

में, लेकिन उसी गर्मनी लहरों ने उस नन्ही नाव को निगल दिया। उसकी किनारें अब भी उसकी प्रतीक्षा में खामोश पड़ी। इसी तरह थाली भी प्रेरणा की जिंदगी भी। उसीसे बनी गयी उस कश्ती की तरह उसकी जीवन भी डूबनेवाली थी।

उस पुरानी हवेली की एक अनजान कोने में सीमित हुई थी प्रेरणा की जिंदगी। अंधविश्वास की आँच में जलती-तपती उस जिंदगी आज एक अँगारी की रूप में परिवर्तित हुई है। उसकी तीखे आँखें में अब उस दीनता की भाव दिखाई नहीं दे रहा है। अब बदले की आँग में उबलती रहती है उन नयनों। उस जून महीने की शोरदार वर्षा के साथ, दुनिया में अपनी पहली साँस ली थी छोटी प्रेरणा। जन्म होते ही, उसकी पहली सास, अपनी माँ की आखिरी सास बन गयी। गाँववालों और रिश्तेदारों ने एक ~~प्रेतबाधित~~ प्रेतबाधित लड़की की मुद्रा डाल दिया प्रेरणा पर। लेकिन दादा और दादी ने उन लोगो की परवाह न किया और खुशी से आगे बढ़ने की कोशिश किया। लेकिन नियति से ऐसा खेल खेला उसके साथ, वैसे दिन-भर-दिन उस बुरा सपना और सज़ा बन जाने शुरू किया था।

हर दिन रात की गुप्त पल में बुरे सपनों उसकी सहारे बन गयी। उस निशा ने बीत गयी, लेकिन कोई चेतावनी भी नहीं दिया कि, वह प्रेरणा की ज़िंदगी में एक नया मोड़ ले आयेगा। बुरे सपने देखके ठिठककर उठ गया प्रेरणा, खिड़की के पास आकर उसकी छड़ पकड़कर विद्रूपता की ओर अपने नरज़ों मज़बूत कर लिया। ~~कल~~ कल को होनेवाले विस्फोट के बारे में वह बेख़बर थी, लेकिन उसी पल वह खोये हुए थी चाँदनी ने उसकी पूरी कोमलता को रोशन किया। उसकी बाल उस थपथपाते गये हवा में लहरा रहे थे। जवानी की खूबसूरती उस चेहरे पर चमक रही थी। उस तनहाई में वह अपनी सुंदर ख्वाबों की जाल बुन रही थी, बुनते-बुनते वह अपनी काम में और लीन होने लगी। लेकिन वह न जानके कहीं बुननेवाली धागा फटने की हालत बन चुकी थी, बीचों-बीच बुनानेवाले सुई उसकी उँगलियों को घुसती थी। तुरंत वह असली दुनिया में वापस आ गयी और फिर सोने के लिए, चारपाई की ओर गया। दादी को गले मिलाकर, अंत में नींद ने उसको साथ दिया।

सुबह, पौ फटने ~~की~~ पहले ही प्रेरणा नींद से उठ गयी। लेकिन दादी अब तक जाग न पड़ा था।

'दादी' 'दादी' "आप अब तक सोती हैं"... "उठो न" लेकिन एक क्षण को बाद एक चिल्लाहट उस मकान पर गुँज रही थी। जो हाथों ने गुब्बारों को इकट्ठा करके उसके हाथों में सोंप दिया, जो हाथों अपनी चोट पर दवा से सहलाया, उस दादा को ही हाथों ने अब उसे छोड़ दिया। "मैं हमेशा तुम्हें अच्छा दिखाने की कोशिश कर रहा था, लेकिन तू.....!!!

कोष में अपनी पहली जीवन की किस्म पैदा होने की ख़बर सुनाया, तब उसको अपने बाप खोया, दुनिया पर अपनी पहली कदम रखने को लम्हे ने अपनी आई को रूह चुरायी। उस छलती निशा ने एक चोर की तरह चालाकी से अपनी दादी की आत्मा को लूटकर भाग गयी। उस पल ने कोसों, अपमान और घृणा की तीखे बाणों ने तेज़ी से आकर उसकी दिल पर चूभ गयी।

एक दिन उस भीषण गर्मी की अवसर पर प्रेरणा को एक छोटी चक्का आया उसकी सिर पर। दिल्ली की हॉस्टल में पढ़ती प्रेरणा को सहारा लेने केलिए कोई नहीं था। दादाजी की करूणा से पढ़ने और जीवन चलाने की कुछ पैसों की इंतज़ाम कर रही थी। गुलमोहर की फूलों से शोभित हुई इस राह से वह चलने लगी.... उस अनुभव ने

ने उसकी रूह को एक अलग का सुकून दिया। हमेशा प्रकृति के गोद में बैठने से हम अपने सारे बोझ को भूल जाने में मजबूर हो जाते हैं। वह आस्पताल एक रिक्शा के सहारे पहुँच गया और डॉक्टर को देखने गया। किस्मत ने इस ज़िंदगी को हमेशा केलिए भूल दिया होगा। इन आँसुओं की समाप्ति को इंतज़ार करते रह गये नियति भी अब सिर झुकाकर बैठ रहे हैं। न पता कि, किसी की गुनाह की भार ~~बुंद~~ साथ लेते हैं ये बच्ची। उस भयंकर बीमारी ने इस जान को दिन-भर-दिन निगल रहे हैं। "वाईरस" किसीको ऐसे-वैसे नहीं छोड़के जायेगा। वह उसकी आत्मा पर चिपककर सारी खुशियों को भी लूटकर जायेगा.....

अब वक्त है ज़रा सोचने को, इस ज़िंदगी का उद्देश्य को हम नहीं पहचान सका, लेकिन गंगा किनारे उसको दोनों हाथों हिलाकर बुला रही थी, "बस मेरा ही बन जाओ प्रेरणा!".... उस पुकार को अनुसार करके वह कूद दिया उसकी गहराई की ओर, गंगा की जान और जिस्म में लीन होकर..... सारी चीज़ों को उस लहरों पर सौंपके.... लेकिन उसकी आँसुओं अब तक बह रहे हैं गंगा की रूह में

अगले दिन की समाचारों में कोई ख़बर भी नहीं आया, सब की नज़र में प्रेरणा अचानक एक दिन ग़ायब हो चुकी है, लेकिन किसी को नहीं पता है कि, वह अब भी बह रही है गंगा की लहरों में, उससे बहती गयी आँसुओं की रूप में....

और एक दिन उसकी नाराज़गी और ज़ोरदार बन गयी। किनारों पार करके आयी, बाढ़ की वेश बदलकर, ज़िस्म और कसबों को निगल दिया। दीन विलापों का साखी बना.....

दिल्लीवालों अब भी कह रहे हैं कि, उस किनारों ने अब भी थके हुआ मनों को हाथों हिलाकर आने की 'प्रेरणा' करती है। अंतविश्वास ने असलियत में उस रूह को एक छलावा बनाया.....

"आओ मेरे पास
गले लगाओ मेरी सास"

इस तोलकार ने अब भी गुँज रही है उस किनारे में..... उस आँसुओं की आवाज़ बनके..

"ज़िंदगी का चाबी मानव के हाथ में नहीं
नियती का खेल तो रोकने लायक नहीं
पर अंतविश्वास की आँग तो बुझना ही है
प्रकृति का रिश्ता तो अटूट है मानव से"